माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

परीक्षा के नाम की सील: हायर सेकण्डरी परीक्षा 2009

विषय कोड

परीक्षा का विषय हिन्दी

2. परीक्षा का माध्यम हिन्दी परीक्षा की दिनांक 12-03-2009

3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट A, B, C या D) अनिवार्यतः भरें

कोड	सेट
U-2001	B

केन्द्र क्रमांक की सील

केन्द्र क्र. 321108

उत्तरपुस्तिका का क्रमांक K 2286860

परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

9	3	2	1	9	6	5	3

दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों को क्रम में शब्दों में लिखा जाए :-

पर्यवेक्षक/केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में ✗ अंकों में ✗

ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक 1 में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक)

नाम R.L.S... पद Asst. Teacher

पता/संस्था H.S. ...

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

BSEMP

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्ति... चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन कि... पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कव्हर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक स...

हस्ताक्षर (परीक्षक) हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक) हस्ताक्षर (मुख्य परीक्षक)

परीक्षक क्रमांक ... Maheshwari 9440010

दिनांक........ दिनांक........

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक / विषय / माध्यम / दिनांक एवं प्रश्न–पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :–

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा / रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

प्रश्न→1
उ०→ (i) मीराबाई कृष्ण भक्ति शाखा की कवयित्री हैं।

(ii) गणेश जी को सबसे पहले पूजा जाता हैं।

(iii) कबीरदास को हृदयहीन कवि कहा जाता हैं।

(iv) बलदाऊ श्रीकृष्ण को चिढ़ा-चिढ़ाकर परेशान करते हैं।

(v) सूरदास वात्सल्य के कुशल चितेरे हैं।

B S E M P

प्र०→2
उ०→ (i) ~~आशंका में।~~ भय में।

(ii) बसन्ती और बद्दू को।

(iii) बिजनौर से।

(iv) रेडीमेड अध्यक्ष।

(v) बचपन के अनुभव।

प्रश्न → 3

उ० →

(i) सत्य ।

(ii) सत्य ।

(iii) असत्य ।

(iv) असत्य ।

(v) सत्य ।

4

उ० →

(i) कठिन काव्य का प्रेत कहा जाता हैं — केशवदास

(ii) हमें अशिक्षित या असभ्य बताने वाले — पश्चिमी देश

(iii) 'बढ़ सिपाही' कविता के रचयिता हैं। — विष्णु कान्त शास्त्री

(iv) झुकाने की सामर्थ्य हैं — वीर

(v) पल्लव वसन कहा गया हैं — सखी अली

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न ⇒ 5

उ. ⇒ (i) डॉ. श्याम सुन्दर दुबे।

(ii) ब्रजभाषा।

(iii) रेलगाड़ी की खटर-पटर।

(iv) महादेवी वर्मा।

(v) ग्वाले ने।

प्रश्न ⇒ 6

उ. ⇒ 'विभावरी के बीतने पर ऊषा नागरी' से हमारा तात्पर्य यह है कि रात के बीतने पर ऊषा रूपी स्त्री जाग गयी है वह कहती है अब तू उठ जा क्योंकि सुबह अर्थात् प्रातः काल का समय आ गया है जिसके कारण हे सखी अब तू जाग जा। ऊषा रूपी स्त्री पनघट रूपी आकाश से तारों की मटकी भर रही है अब तू देख सभी अपने अपने कार्य को सम्पादित कर रहे हैं प्रातः काल का वर्णन करते हुए वह कहती है कि— देख सभी पक्षी आकाश चहचहाते हुए उड़ रहे हैं अपना करलव करते हुए प्रकृति में संगीत बद्ध लय का बहाव कर रहे हैं उसी समय अपनी मनोरम छटा बिखेरते हुए सूर्य का भी आगमन हो गया है। प्रातः काल प्रकृति द्वारा बहती हुए पवन के झकोरों ने किसलय के पौधों पर अपना आँचल रूपी जाल बिखेर रहा है। जिस कारण से गेहूँओं की कोमल कोपलें आँचल के समान उड़ रही हैं। इन्ही सभी दृश्यों को देखकर नायिका कहती है कि हे सखि। अब तू जाग जा क्योंकि रात बीत चुकी हैं।

P.T.O.

BSEMP

विभावरी से रात तथा ऊषा नागरी से आशय सुबह रूपी नायिका से हैं।

प्रश्न ⇒ 12

उ० ⇒ शांत रस ⇒ जहाँ पर दुनिया की नश्वर चीजों से विरक्त होकर ईश्वर के चरणों में लीन हो जाने पर जो आत्मा को शांति का अनुभव होता है, उसी को शान्त रस कहा जाता है।

अनुभाव, संचारी भाव तथा विभाव मिलकर स्थायी भाव को परिपक्व कर करते हैं तभी रस की निष्पत्ति होती हैं।

इसी रचना के अनुसार ही शान्त रस का भी निष्पादन किया गया हैं।

शान्त रस का उदाहरण ⇒

राम नाम की लूट है,
लूट सको तो लूट।
अन्त काल पछतायेगा,
जब प्राण जायेंगे छूट ॥

BSEM

प्रश्न ⇒ 14
उ० ⇒

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(क) दो रचनाएँ ⇒ (i) रस मीमांसा
(ii) चिन्तामणि – 1

(ख) भाषा ⇒ आचार्य राम चन्द्र शुक्ल जी की भाषा अत्यन्त सहज एवं सरल हैं आचार्य रामचन्द्र जी की भाषा अत्यन्त प्रवाहमयी तथा ओजस्वी है जिसके कारण भाषा में समरसता आ गयी हैं। इनकी भाषा खड़ी बोली हैं। तथा मुहावरों, लोकोक्तियों के सुदृढ़ प्रयोग के कारण इनकी भाषा में सामन्यता के साथ-साथ विशिष्टता के गुण का भी प्रादुर्भाव होगया हैं। इनकी भाषा काव्य गुणों का भी समागम हैं।

शैली ⇒ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी ने निम्न लिखित शैलियों का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया हैं—

(i) वर्णात्मक शैली ⇒ आचार्य राम चन्द्र शुक्ल जी ने अपने ~~साहि~~ साहित्य में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया हैं।

आत्म व्यंजात्मक शैली ⇒ आचार्य राम चन्द्र शुक्ल जी ने आत्म व्यंजात्मक शैली का भी प्रयोग अपने साहित्य में किया हैं। आत्म व्यंजक शैली एक विशेष परक शैली हैं।

P.T.O.

BSEMP

पृष्ठ के अंक

(iii) विचारात्मक शैली ⇒ आचार्य राम चन्द्र शुक्ल जी ने विचारात्मक शैली का भी चित्रण अपने साहित्य में किया हैं।

इन्होंने भावात्मक, विश्लेषणात्मक, विशिष्टात्मक आदि शैलियों का प्रयोग अपने काव्य साहित्य में किया हैं।

(iv) साहित्य में स्थान ⇒ आचार्य राम चन्द्र शुक्ल जी साहित्य के स्तंभ कारक लेखक हैं। इनमें आलोचना करनेका एक अत्यन्त विशिष्ट गुण हैं। ये महान साहित्य कारों में से एक हैं। हमारा हिन्दी साहित्य इन्हें कभी भूलेगा।

B
S
E
M प्रश्न ⇒ 15
उ० ⇒
P

(क) दो रचनाएँ ⇒ ① ~~सूरदास~~ सूरसागर।
② साहित्य लहरी।

(ख) भाव पक्ष ⇒ महाकवि सूरदास बहुत महान कवियों में से एक हैं। इन्हों श्रीकृष्ण का वर्णन इस ढंग से किया है कि इनका श्रवण कर कानों में नयी उत्तेजना का संचार हो जाता हैं।

पृष्ठ के अंकों का योग

① श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त ⇒ सूरदास भगवान श्रीकृष्ण के अनन्य भक्तों में से एक हैं। इन्होंने आँखे न होते हुए भी इनका दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त किया हैं।

(ii) वात्सल्य के चितेरे ⇒ महाकवि सूरदास जी वात्सल्य रस के चितेरे कहे जाते हैं क्योंकि इन्होंने इसका वर्णन कुशल ढंग से किया है।

(iii) प्राकृतिक प्रेम भावना ⇒ महाकवि सूरदास प्राकृतिक प्रेम भावों द्वारा भी अपने कविता का विस्तारण किया हैं।

(iv) भक्ति भाव से पूर्ण ⇒ महा कवि सूरदास जी भक्ति भाव से पूर्ण रूपेण परिपूर्ण थें। भक्ति भाव से ही उन्होंने अपना काव्य रचित किया।

कलापक्ष ⇒ (i) शान्त रस का प्रयोग ⇒ सूरदास जी ने शान्त रस का प्रयोग कर कविता में सरसता ला दी हैं।

महा कवि सूरदास जी ने मुक्तक गेय काव्य तथा रोला और उल्लाला छन्द तथा पुनरुक्त प्रकाश आदि अलंकारों का प्रयोग किया हैं। तथा इसमें संगीतात्मकता भी होती हैं।

(ग) साहित्य में स्थान ⇒ महाकवि सूर दास जी का साहित्य में अत्यन्त महत्व पूर्ण स्थान हैं। ये कृष्ण भक्ति शाखा के सर्वोच्च कवि माने जाते हैं। सूरदास जी अपने काव्य के द्वारा ही इतने प्रसिद्ध हुए हैं।

BSEMP

प्रश्न ⇒ 16
उ० ⇒ संकेत ⇒ दुख या ———————————— तक रहता हैं।

सन्दर्भ ⇒ प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक स्वाति के भय नामक पाठ से उद्धृत हैं। इसके लेखक आचार्य राम चन्द्र शुक्ल जी हैं।

प्रसंग ⇒ यहाँ पर ~~कवि~~ लेखक ने आशंका का वर्णन किया हैं।

व्याख्या ⇒ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी कहते है कि दुख या आपत्ति का पूर्ण निश्चय न रहने पर पर उसके आने की सम्भावना मात्र से जो आवेश रहित मनोविकार की उत्पत्ति होती हैं उसे आशंका द्वारा व्यक्त किया हैं। वे कहते हैं इस स्थिति में व्यक्ति को व्याकुलता की भावना ग्रसित नही करती हैं। इस आशंका की संचार गति अपेक्षाकृत धीमी होती हैं। परन्तु इसका प्रभाव अधिक समय तक प्रभावित करता हैं। आशंका तथा भय में यही तो अन्तर होता हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी ने यहाँ पर आशंका का वर्णन किया हैं।

B S E M P

प्रश्न ⇒ 17

उ० ⇒ संकेत ⇒ भाई एक लहर ———— ध्रुवतारा हैं।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक स्वाति के भाई बहन नामक शीर्षक से उद्भृत हैं। इसके रचयिता गोपाल सिंह नेपाली हैं।

प्रसंग ⇒ यहाँ पर कवि भाई के ~~सम्मब~~ सम्बन्ध को व्यक्त किया हैं।

व्याख्या ⇒ गोपाल सिंह नेपाली जी कहते है एक भाई राष्ट्र हित के लिए अपनी बहन से कहता है कि मैं लहर के रूप में बन जाऊँ और तुम नदी की धारा के समान तीव्र बन जाओ और जब हम हम दोनों मिल कर देश की रक्षा करेगे तब यह संगम गंगा के समान हो जाएगा तथा अपने देश के दुश्मनों को किनारे के समान डुबो देंगें। इसी उत्तेजना में भाई कहता है कि विपत्ति के समय में भाई ही केवल अपनी बहन का सहारा हैं। तथा उसी प्रकार एक बहन भाई ध्रुवतारा हैं। अर्थात् अत्यन्त प्रिय हैं।

शेष ⇒
1. राष्ट्रीयता के भाव।
2. देश की रक्षा के प्रति समर्पण।
3. पुनरुक्त प्रकाश अलंकार।
4. ओज गुण का वर्णन।

B S E M P

य

प्रश्न ⇒ 16

उ० ⇒ (i) उपयुक्त शीर्षक — "धर्म पालन"।

(ii) धर्म पालन करने में सबसे बड़ी बाधा चित्त की चंचलता, उद्देश्य की प्राप्ति की अस्थिरता और मन की दुर्बलता की हैं। मनुष्य को अपने कर्तव्य मार्ग पर अज्ञान तथा आलस्य को छोड़ देना चाहिए। यदि उसका मन अन्त में पक्का हुआ तो आत्मा का हानि मानकर अपने धर्म का पालन करता हैं। और यदि नही तो वह अपना चरित्र खराब कर लेता हैं।

(iii) धर्म पालन में बड़ी बाधा मन की चंचलता, उद्देश्य की अस्थिरता और मन की दुर्बलता हैं।

P
L
M
P

प्रश्न ⇒ 13

उ० ⇒ (अ) आँखों का तारा — मोहन अपने पिता का आँखों का तारा हैं।

अंधे की लाठी — सोहन अपनी बूढ़ी माँ के लिए अंधे के लाठी के समान हैं।

(ब) बुन्देली एवं मालवी मध्य प्रदेश के बुन्देल खण्ड, झाबुआ, मालवीय, बघेल खण्ड आदि में बोली जाती हैं।

अथवा

(अ) (i) सूर्योदय के साथ पक्षी चहचहाने लगते हैं।

(ii) गरीब होते हुए भी वह ईमानदार हैं।

प्रश्न ⇒ 10

उ: ⇒ भय और आशंका में अन्तर—

भय	आशंका
① दुख या आपत्ति की सम्भावना से जो आवेश पूर्ण स्थायी मनोविकार पैदा होता है उसे भय कहते हैं।	① आशंका तो आवेश शून्य भाव को कहते हैं।
② इसमें व्याकुलता पायी जाती हैं।	② इसमें व्याकुलता नही पायी जाती हैं।
③ इसमें संचार की गति तेज होती हैं।	③ इसमें संचार की गति अपेक्षाकृत धीमी होती हैं।
(4) इसका प्रभाव कम समय तक रहता हैं।	(4) इसमें प्रभाव अधिक समय तक रहता हैं।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न → 17
उ० →

सेवा में,

श्रीमान जिलाध्यक्ष महोदय,
जिला – रीवा (म०प्र०)

विषय → ध्वनि विस्तारक यन्त्रों पर प्रतिबन्ध लगाने हेतु आवेदन पत्र ।

मान्यवर, विनम्र निवेदन है कि मैं जिला रीवा की निवासी हूँ। जैसे की आप को ज्ञात होगा की बोर्ड की परीक्षाएँ नजदीक हैं। अतः बच्चों को शांत वातावरण चाहिए परन्तु स्कूल के आस-पास आजकल अत्यन्त तेज ध्वनि में टेप रिकार्डों को बजाया जा रहा है जिसके कारण छात्रों का अध्ययन प्रभावित हो रहा हैं।

अस्तु, अतः श्रीमान जी से विनम्र निवेदन है की इन ध्वनि विस्तारक यन्त्रों पर प्रतिबन्ध लगाने का आदेश जारी करें आपकी बड़ी कृपा होगी।

धन्यवाद

आपका निवासी (आज्ञाकारी)
ABC

दिनांक – 6-03-2009

B S E M P

प्रश्न ⇒ 8

उ० ⇒ रहस्यवादी कविता की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:—

(1) आलौकिक सत्ता के प्रति प्रेम ⇒ रहस्य वादी कविता में आलौकिक सत्ता के प्रति प्रेम का विस्तार पाया जाता हैं। रहस्यवादी कविता में इन पर विश्वास किया जाता हैं।

(2) प्रकृति के प्रति प्रेम ⇒ रहस्य वादी कविता में प्रकृति के प्रति मानवीकरण की प्रवृति पायी जाती हैं। रहस्य वादी काव्य धारा में ही प्रकृति प्रेम का रस उमड़ता हैं।

(3) रूढ़िवादियों के प्रति विद्रोह — रहस्य वादी कविताओं में रूढ़वादी परम्परा का विद्रोह किया गया हैं।

B S E M P

सामाजिक यथार्थ का चित्रण ⇒ रहस्य वादी कविताओं में सामाजिक यथार्थ का चित्रण किया गया हैं। कल्पना का इसमें कोई महत्व नही होता हैं।

प्रश्न→ 9
उ.→ हिन्दी में उपन्यास सम्राट जयशंकर प्रसाद को कहा गया है क्योंकि इन्होंने सबसे ज्यादा उपन्यासों का प्रतिपादन किया गया हैं। जयशंकर प्रसाद उपन्यास कारकों में से एक हैं।

जयशंकर प्रसाद के दो उपन्यास— ① कामायनी ।
② लहर ।

B S E M P

प्रश्न→ 11
उ.→ बाँसुरी की मीठी टेर सुनकर देवकी ने अत्यन्त आनन्द का अनुभव किया। जब कंस द्वारा वह कारागार में बंदी बनी थी तब वह निराशा आदि दुखों से घिरी हुई थी।

परन्तु अब वह उस बाँसुरी की टेर को सुनकर वह आनन्दित हो उठी थी। उसे ऐसा लग रहा था मानों समस्त संसार में कुछ भी सत्य नही हैं। सब कुछ नश्वर है असली सुख तो इन सब के त्याग मे ही निहित हैं। उसे लग रहा था मानों उसके हृदय का बगीचा अत्यन्त सुगन्ध से भर गया हैं। उसे अब जन्म मरण का कोई दुख नही था वह पूर्ण रूपेण निर्भीक हो गयी थी। वह सभी

को यही शिक्षा दे रही थी की जन्म-मरण ये दोनों ही सत्य का प्रति बिम्ब हैं इसके अलावा समस्त संसार में कुछ भी सत्य नहीं है अतः हम सबको यह याद रखते हुए परमात्मा के ध्यान लगे रहते हुए मोक्ष के मार्ग पर सफलता पूर्वक जाने को तैयार करना चाहिए। कंस उसके इस रूप देखकर भयभीत हो गया और वसुदेव के आश्चर्य की तो सीमा ही नही रही।

B S E M P

प्रश्न ⇒ 7

उ ⇒ "फूल और मालिन" दोनों ही तथ्य एक दूसरे के पूरक हैं। क्योंकि फूल मालिन के पास ही तैयार किया जाता है तथा मालिन ही फूल को तोड़ता हैं। अतः ये दोनों एक दूसरे से सम्बन्धित हैं। क्योंकि ये दोनों एक दूसरे से सम्बन्धित है इसलिए ये दोनों अवश्यम्भावी प्रक्रिया हैं। फूल और मालिन दोनों अपने अन्त के समय में मुरझा जाते हैं। अनेक असमानता होते हुए भी ये एक साथ ही मुरझा जाता हैं। फूल और मालिन दोनों ही अपने गुणों की वजह से ही एक दूसरे को प्रभावित करने में सक्षम हैं। तभी तो ये दोनों एक ही स्थिति में जा कर मुरझा जाते हैं। फूल और मालिन एक तुलनात्मक पक्षों की तरह हैं। फूल और मालिन दोनों ही अपनी राष्ट्र रक्षा के प्रति सजग रहने को तैयार हैं।

BSEMP

प्रश्न ⇒ 20
उ० →

प्रदूषण : कारण और निदान

रूपरेखा ⇒ ① प्रस्तावना ② प्रदूषण के कारण ③ प्रदूषण के प्रकार ④ प्रदूषण का निदान ⑤ उपसंहार।

① प्रस्तावना ⇒ आज हमारा देश अनेक समस्याओं से घिरा हुआ हैं। उन समस्याओं में से एक समस्या प्रदूषण की समस्या हैं। प्रदूषण की समस्या हमारी मानव जाति की दी हुई देन हैं। प्रदूषण की समस्या से हमारा परिचय हमारे द्वारा की गमी गलतियों से हुआ हैं क्योंकि पर्यावरण का प्रदूषित होना हमारे मानव जाति के समक्ष एक अत्यन्त महत्व पूर्ण चुनौती हैं। प्रदूषण की समस्या हमारे देश के लोग अपनी दैनिक क्रियाओं को सम्पादित करने के लिए हमारे द्वारा जिन यंत्रों का प्रयोग किया जाता है उनके द्वारा हमारा पर्यावरण प्रदूषित होता हैं। पर्यावरण समस्या हमारे सम्पूर्ण भूमण्डल में व्याप्त हो चुकी हैं। अतः हमें कुछ उपाय कर इन समस्याओं से छुटकारा पाना चाहिए नहीं तो हमारा सम्पूर्ण समाज बाधित हो जाएगा। आज हमारा पर्यावरण पूर्ण रूप से विशुद्ध हो गया हैं।

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

② प्रदूषण के कारण ⇒ प्रदूषण के कारण अनेक हैं। क्योंकि आज हमारा पर्यावरण अनेक प्रकार की विषम परिस्थितियों का सामना कर रहा हैं। आज हमें विकास की दौड़ में दौड़ते चले जा रहें हैं परन्तु यह नही देख रहें हैं कि इस प्रगति से हमारे देश को कितनी हानि उठानी पड़ रही हैं।

पर्यावरण प्रदूषण के मुख्य कारण —

(i) औद्योगीकरण का विकास।

(ii) वाहनों में प्रतीशत बढ़ती हुई वृद्धि।

(iii) रासायनों का अंधाधुन्ध प्रयोग।

(iv) वनों का बिनाश।

(v) वनागति।

(vi) वृक्षारोपण की गति अत्यन्त धीमी।

उपरोक्त दिये गये कारणों में से ही हमारा पर्यावरण प्रदूषित होता जा रहा हैं। अतः हमें चाहिए की इन सभी के ऊपर नियंत्रण पा सके ताकि भारत में पर्यावरण प्रदूषण की दर कम हो सकें। और हमारा पर्यावरण स्वच्छ और निर्मल बना रहें।

P.T.O.

पृष्ठ के अंकों का योग

(ख) प्रदूषण के प्रकार ⇒ भारत में पर्यावरण प्रदूषण अनेक प्रकार का होता है—

1. वायु प्रदूषण।
2. जल प्रदूषण।
3. मृदा प्रदूषण।
4. रेडियोधर्मी प्रदूषण।
5. उर्वरक प्रदूषण।

(1) वायु प्रदूषण ⇒ प्रदूषण के अनेक प्रकारों में से वायु प्रदूषण का महत्व पूर्ण स्थान है क्योंकि वायु प्रदूषण सबसे ज्यादा होता है जिसके लिए जिम्मेदार हम मनुष्य ही तो हैं।

(2) जल प्रदूषण ⇒ जल प्रदूषण से हमारा आशय स्वच्छ जल (H_2O) में अनेक अवांछनीय पदार्थों का मिल जाना ही जल प्रदूषण कहलाता है। जल प्रदूषक तत्व जैसे— पशुओं का अपशिष्ट पदार्थ, कारखानों से निकला अपशिष्ट पदार्थ, पशुओं का जलाशयों में स्नान आदि।

(3) मृदा प्रदूषण ⇒ जल प्रदूषण के समान ही मृदा प्रदूषण भी होता है क्योंकि मृदा में अवांछनीय पदार्थों का मिलना ही मृदा प्रदूषण कहलाता है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

⑤ रेडियोधर्मी प्रदूषण ⇒ जिन पदार्थों से रेडियोधर्मी तरंगे उत्पन्न होती है वह पर्यावरण को नुकसान पहुँचाती हैं।

प्रदूषण के निदान ⇒ पर्यावरण प्रदूषण हमारे देश के समक्ष एक अत्यन्त गम्भीर समस्या हैं। अतः इसके निदान हेतु हमें अनेक उपाय करने चाहिए —

① वृक्षारोपण की गति तेज।
② जनसंख्या वृद्धि दर धीमी।
③ औद्योगीकरण की सीमा का निर्धारण।
④ वाहनों का दूसरा विकल्प खोजना।
⑤ उर्वरकों का समुचित प्रयोग।

उपरोक्त उपायों को कर हम सब पर्यावरण प्रदूषण की समस्या को कम कर सकते हैं। पर्यावरण प्रदूषण हमारे देश के समक्ष एक अति सोचनीय समस्या हैं। अतः हमें इन उपायों को कर के पर्यावरण की समस्या का निदान करना चाहिए।

" अंधकार है वहाँ जहाँ आदित्य नही,
मुर्दा है वह देश जहाँ जागृति नही "।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

उपसंहार ⇒ उपरोक्त तथ्यों को देखते हुए हम यह कह सकते है कि पर्यावरण का बचाव करना हमारे लिए अत्यन्त आवश्यक हैं। और हम यह कर भी सकता हैं।

और कहा भी गया हैं –

" जिन मुश्किलों में मुस्कुराना हो मना
उन मुश्किलों में मुस्कुराना हमारा धर्म हैं। "

BSEMP

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 23 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

ोग पूर्व पृष्ठ	+	पृष्ठ 24 के अंक	=	कुल अंक

मध्यप्रदेश

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग